

Padma Shri



SHRI JOYNACHARAN BATHARI

Shri Joynacharan Bathari, a retired Govt. servant of Sub Divisional office Haflong is well known for traditional folk music in Dima Hasao. He had a passion to bring the folk music and traditional instruments of Dimasa Community in the lime light of the country for which he worked very hard with dedication.

2. Born on 1st July 1940 at Jorai Bathari village in Dima Hasao district of Assam (earlier North Cachar Hills), Shri Bathari from an early age devoted himself to Dimasa Folk music. His hard work and sincerity made him a singer and by virtue of this he has been invited to perform several programmes in AIR Silchar, AIR Haflong, AIR Dibrugarh & AIR Shillong. He has also performed stage programmes in various places at Haflong, Maibang, Silchar, Agartala, Umrangsho, Diphu, Guwahati and even at National Capital Delhi. Besides singing, he is acquainted with the Dimasa traditional musical instruments as well. He is well versed in playing the “Khram”(Drum) and “Muri”(Flute). He has been representing the district in various Cultural Meet held in other N.E. States. For his activities in Cultural field, he has been awarded by various NGOs of Dima Hasao district.

3. Shri Bathari retired from service on 31/07/1998. Even after that, he has been leading an active social life. He worked as Mouzadar w.e.f. 2001 to 2007 of Haflong Mauza. He also worked as Khunang (Gaon Bura) of Sainza razi for 22 (twenty two years) w.e.f.1987 to 2001 and 2012 to 2020 and he also worked as Assistant Khunang (Gaon Bura) w.e.f. 1979 to 1987. Even after retirement he rendered his services as a priest of the Dimasa community day in and out and he was associated with NGO “Jadikhe Naisho Hoshom” (The Dimasa Apex Body). He is well versed with Dimasa customs and rituals. Even at this age of 84, he continues to sing and entertain.

4. Shri Bathari was conferred the coveted Pratima Baruah Pandey memorial award for the year 2013 by All Assam Student Union (AASU) for playing a pivotal role in popularising the Dimasa traditional and folk culture. Shri Bathari was also awarded Life Time Achievement Award in the year 2018 by Akhil Bharat Hindu Sammelan, Assam. He also got Johaya Bathari award in the same year by Bathari Sengphong Mel.



श्री जयनाचरण बाठारी

श्री जयनाचरण बाठारी, उप-मंडल कार्यालय हाफलोंग के सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारी हैं, जो दीमा हसाओ में पारंपरिक लोक संगीत के लिए जाने जाते हैं। उन्हें दीमासा समुदाय के लोक संगीत और पारंपरिक वाद्ययंत्रों को देश में लोक-प्रसिद्ध बनाने का जुनून था, जिसके लिए उन्होंने पूरी लगन और मेहनत से कार्य किया।

2. दिनांक 01 जुलाई 1940 को असम के दीमा हसाओ जिले (पूर्ववर्ती उत्तरी कछार हिल्स) के जोराई बाथारी गांव में जन्मे, श्री बाठारी ने कम उम्र से ही दीमासा लोक संगीत के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। उनकी कड़ी मेहनत और नेकनीयती ने उन्हें एक गायक बना दिया और इसके कारण उन्हें आकाशवाणी सिलचर, आकाशवाणी हाफलोंग, आकाशवाणी डिब्रूगढ़ और आकाशवाणी शिलांग में कई कार्यक्रमों में प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया गया। उन्होंने हाफलोंग, माईबांग, सिलचर, अगरतला, उमरंगशो, दिफू, गुवाहाटी और यहां तक कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में भी कई स्थानों पर मंचीय कार्यक्रमों में प्रस्तुतियाँ दीं हैं। गायन के अलावा, उनका परिचय दीमासा पारंपरिक संगीत वाद्ययंत्रों से भी है। उन्हें "खरम" (ड्रम) और "मुरी" (बांसुरी) बजाने में महारत हासिल है। वह अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक सम्मेलनों में अपने जिले का प्रतिनिधित्व करते रहे हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र में उनके कार्यक्रमों के लिए, उन्हें दीमा हसाओ जिले के विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया है।

3. श्री बाठारी दिनांक 31/07/1998 को राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त हुए और इसके बाद भी वह सक्रिय सामाजिक जीवन जी रहे हैं। उन्होंने वर्ष 2001 से 2007 तक हाफलोंग मौजा के मौजादार के रूप में कार्य किया। वह वर्ष 1987 से 2001 और वर्ष 2012 से 2020 तक 22 (बाईस वर्ष) के लिए सैंजा रजी के खुनांग (बूरा गाँव) के रूप में भी वर्ष 1979 से 1987 तक कार्य किया। सेवानिवृत्ति के बाद भी उन्होंने दिन-रात दीमासा समुदाय के एक पुजारी के रूप में अपनी सेवाएं दीं और वे गैर-सरकारी संगठन "जदिखे नैशो होशोम" (दीमासा शीर्षस्थ निकाय) से जुड़े रहे। वह दीमासा रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों से अच्छी तरह से वाकिफ हैं। 84 वर्ष की इस उम्र में भी वह गायन और मनोरंजन करना जारी रखे हुए हैं।

4. श्री बाठारी को दीमासा पारंपरिक और लोक संस्कृति को प्रसिद्धि दिलाने में अहम भूमिका निभाने के लिए ऑल असम स्टूडेंट यूनियन (आसू) द्वारा वर्ष 2013 के लिए प्रतिष्ठित प्रतिमा बरुआ पांडे मेमोरियल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री बाठारी को अखिल भारतीय हिंदू सम्मेलन, असम प्रदेश द्वारा वर्ष 2018 में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया था। इसी वर्ष उन्हें बाथारी सेंगफोंग मेल द्वारा जोहाया बाथारी पुरस्कार भी प्रदान किया गया।